भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर का संदेश सुनाया

(बच्चों के शिक्षक अध्ययन न. पी.9 बी. पढ़ें)

प्रार्थना :-''प्रिय प्रभु, मेरी और मेरे झुण्ड की अगुवाई कीजिए कि हम आपके विषय में तथा उन सन्देशों में जो मसीह के आगमन के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने सनुाए, अपने लिए, आपकी योजना समझ सकें।''

1. पुराने नियम की भविष्यवाणी संबंधी पुस्तकें पढ़ाने के लिए तैयारी कीजिए।

भविष्यद्वक्ताओं की रचनाओं का काल

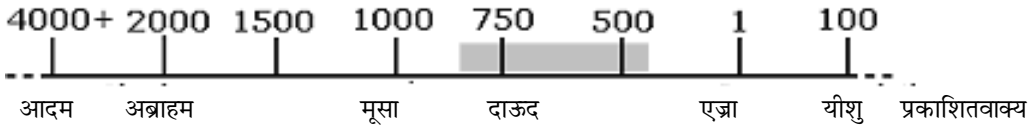

उपरोक्त तालिका में जो भाग छायांकित है, यह दर्शाता है कि इस काल में भविष्यद्वक्ताओं ने रचनाएं कीं (ई. पू. 835 से ई.पू. 400 के मध्य)

यशायाह 6:1-8 पढ़ें व उत्तर खोजें :

- परमेश्वर का दर्शन पाने के बाद भविष्यद्वक्ता का प्रत्युत्तर। (पद 1-5)
- परमेश्वर ने उसे किस प्रकार सान्त्वना दी (पद 6-7)
- यशायाह को क्या कार्य करने की बुलाहट मिली। (पद 8)

परिभाषाएं

भविष्यद्वक्ता : पुराने नियम के युग में, परमेश्वर बहुदा अपनी प्रजा इस्राएल को ''पवित्र लोगों'' द्वारा संदेश पहुंचाता था, जिन्हें पवित्रात्मा उभारता था। (2 पतरस 1:2)

भविष्यवाणी : परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता लोगों को पापों से पश्चात्ताप् करने तथा परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का अव्हान करते थे, वे समझाते थे कि लोग दु:ख क्यों उठाते हैं, वे विश्वासियों को आशा व शान्ति प्राप्त होने का आश्वासन देते थे, न्याय की घोषणा करते थे, तथा एक धार्मिक राजा के आगमन का संदेश देते थे जो न्याय व धर्म से राज्य करेगा, इस राजा को वे मसीह नाम से पुकारते थे।

भविष्य-वचन : परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता कभी-कभी ऐसे वचन कहा करते थे, जो भविष्य से संबंधित होते थे, वे चार प्रकार के भविष्य कथन कहा करते थे। (1) कुछ वचन उन्हीं के जीवन काल में पूरे हो जाया करते थे, (2) कुछ वचन उस समय पूरे हो जाया करते थे, जब उनकी मृत्यु हो जाती थी, (3) और शेष बातें लगभग 100 वर्ष बाद पूरी हुईं, (4) कुछ उनके वचन अभी तक पूरे नहीं हुए हैं। (यशायाह 42:8-9)

सच्चे भविष्यद्वक्ता : सभी सच्चे नबी यहूदी थे, वे केवल यहोवा परमेश्वर के सन्देश देते थे, वे अन्य देवताओं की ओर से कभी भी नहीं बोलते थे। सच्चे नबियों के वचन अवश्य पूरे होते थे। कुछ नबियों ने उत्तरी राज्य इस्राएल के लिए तथा कुछ नबियों ने दक्षिणी राज्य यहूदा के लिए संदेश दिए। कुछ ने, विशेषकर योना ने अन्य राष्ट्र के संबंध में संदेश दिया। (व्यवस्था विवरण 18:17-21)

झूठे भविष्यद्वक्ता : झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने यहोवा परमेश्वर को छोड़ अन्य देवी-देवताओं की ओर से संदेश दिए, उन्होंने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया और लोगों को अन्य देवी-देवताओं की उपासन कराने का प्रयत्न किया। (व्यवस्था-विवरण 13:1-4)

पुराने नियम की भविष्यवाणियों से संबंधी पुस्तकों का सारांश

मूसा के अतिरिक्त 17 अन्य पुराने नियम के नबियों ने पुस्तकें लिखीं हैं जो बाइबल में पाई जाती हैं। नीचे एक

सूचि दी जा रही है जिससे स्पष्ट हो जाएगा कि यीशु मसीह से कितने वर्ष पूर्व उन्होंने सन्देश दिए।

ई.पू. 835 : योएल भविष्यद्वक्ता ने यहूदिया में टिड्डियों का दर्शन देखा। उसने पश्चात्ताप् करने का सन्देश दिया। प्रेरितों के काम 2:16-21 पढ़ें व ज्ञात करें कि किस प्रकार पतरस ने योएल 2:28-32 का उपयोग अपने संदेश में किया।

ई.पू. 783-753 : योना ने इस काल में गैर यहूदी राष्ट्र निनवे निवासियों को पश्चात्ताप् करने का सन्देश दिया। मत्ती 12:40-41 पढ़ें वे देखें कि यीशु मसीह ने योना 1:17 का उपयोग करते हुए क्या प्रमाणित किया।

ई. पू. 760-750 : इस काल में आमोस नबी ने इस्राएल के विनाश एवं भविष्य की आशा की घोषणा की। प्रेरितों के काम 15:13-19 पढ़ें और ज्ञात करें कि याकूब ने आमोस 9:11-12 का प्रयोग करते हुए क्या बात समझाई।

ई. पू. 755-710 : इस युग में होशे नबी ने इस्राएल जाति के विश्वासघात का चित्रण किया तथा भविष्य के छुटकारे का सन्देश दिया। रोमियों 9:22-26 पढ़ें व ज्ञात करें कि संत पौलुस ने होशे 2:23 को किस प्रकार प्रयोग किया।

ई. पू. 740-680 : यशायाह ने यहूदा राष्ट्र को परमेश्वर पर भरोसा रखने और उद्धार पाने तथा मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने का सन्देश दिया। प्रेरितों के काम 9:30-35 पढ़ें और देखें कि किस प्रकार फिलिप्पुस ने कूश देश के अधिकारी को यशायाह 53:7-8 की बातें समझाईं।

ई. पू. 739-686 : मीका ने इस युग में यहूदा और इस्रायल राष्ट्रों को आने वाले न्याय की चेतावनी दी और आशा का सन्देश सुनाया। मत्ती 10:35-39 पढ़ें और देखें कि प्रभु यीशु ने किस प्रकार मीका 7:6 का उदहारण दिया।

ई. पू. 664-612 : नहूम ने इस काल में यहूदा और निनवे का न्याय होने और शुभ संदेश की घोषणा की। रोमियों 10:15 पढ़ें और ज्ञात करें कि पौलुस ने नहूम 1:15 का प्रयोग कैसे किया।

ई. पू. 640-628 : सपन्याह ने यहूदा राष्ट्र को भयानक परमेश्वरीय न्याय की चेतावनी दी और लोगों को सत्य बोलने का अह्वान किया। प्रकाशितवाक्य 14:5 में ज्ञात करें कि यूहन्ना ने सपन्याह 3:13 का किस प्रकार उपयोग किया।

ई. पू. 626-580 : यिर्मयाह ने यहूदा राष्ट्र को बन्धु आई में जाने की चेतावनी दी, लोगों से आग्रह किया कि वे शत्रुओं की अधीनता स्वीकार कर लें। नई वाचा बांधे जाने की प्रतिज्ञा की। इब्रानियों 8:7-13 पढ़ें व ज्ञात करें कि किस प्रकार यिर्मयाह द्वारा 31:31-34 में नई वाचा की प्रतिज्ञा की गई।

ई. पू. 609-597 : हबक्कूक ने इस काल में यहूदा और निनवे के विरुद्ध न्याय की घोषणा की और विश्वास रखने की पुकार लगाई। गलातियों 3:11 पढ़ें और ज्ञात करें कि पौलुस ने वहां हबक्कूक 2:4 किस प्रकार लागू किया।

ई. पू. 605-530 : दानिएल ने अन्य जातियों के संबंध में अपने दर्शनों की विस्तृत चर्चा की तथा विश्वासियों के भविष्य में जी उठने के विषय बताया। लूका 2:25-28 पढ़ें व ज्ञात करें कि दानिएल 7:13 का प्रयोग करते हुए किस प्रकार यीशु ने अपने द्वितीय आगमन के विषय बताया।

ई. पू. 587-565 : यहेजकेल इस युग में यहुदियों के स्वदेश लौटने और मंदिर पुन: बनाए जाने के अपने दर्शनों का विस्तार से वर्णन करता है। 2 कुरिन्थियों 6:16-18 पढ़ें व ज्ञात करें कि पौलुस ने यहेजकेल 20:34,41 तथा 37:27 का प्रयोग किस प्रकार किया।

ई. पू. 586-584 : विलाप गीत में येरुशलेम पर आने वाले विनाश का वर्णन पाया जाता है। मरकुस 15:29-30 पढ़ें व ज्ञात करें कि विलाप गीत 2:15 यीशु पर किस प्रकार लागू होते हैं जबकि वे क्रूस पर लटके हुए थे।

ई. पू. 586 : ओबद्याह ने एदोम के न्याय व विनाश तथा इस्राएल की विजय की भविष्यवाणी की। प्रकाशितवाक्य 11:15 में देखें ओबद्याह 1:21 की भविष्यवाणी की अंतिम पूर्ति।

ई. पू. 520-519 : जकर्याह ने भविष्य में आने वाले राजा के विषय में, जिसे वे मसीह कहा करते थे, अनेकों भविष्यवाणियां कीं। मत्ती 21:4-6 पढ़ें व ज्ञात करें कि प्रभु यीशु में जकर्याह 9:9 किस प्रकार पूरा हुआ।

ई. पू. 520 : हाग्गै ने यहूदा निवासियों से पुन: मंदिर निर्माण का निवेदन किया और भविष्य की आशीषों की प्रतीज्ञा की। इब्रानियों 12:26-29 पढ़ें व ज्ञात करें कि किस प्रकार हाग्गै 2:6 की भविष्यवाणी पूरी होगी।

ई. पू. 430-400 : मलाकी अंतिम लेखक भविष्यद्वक्ता था। मत्ती 11:10-11 पढ़ें और देखें कि किस प्रकार यीशु ने मलाकी 3:1 की भविष्यवाणी को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर लागू किया।

नए नियम के : परमेश्वर ने प्रत्येक मसीही कलीसिया में ''प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनाने वाले, रखवाले एवं उपदेशक आदि नियुक्त किए हैं'' (इफिसियों 4:11)। मसीही भविष्यवक्ता नवीन पवित्रशास्त्रों की रचना तो नहीं करते परन्तु वे कभी-कभी ऐसे भविष्यवाणी के वचन अवश्य बोलते हैं जिनके द्वारा मसीही लोग दूसरों की चिंता कर व सेवा कर सकते हैं (प्रेरितों के काम 11:27-30)। जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है (1 कुरिन्थियों 1453)। सभी मसीही आपस में एक दूसरे के लिए भविष्यवाणी कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 14:24)।

2. आगामी सप्ताह के लिए योजनाएं बनाएं।

विश्वासियों से कहें कि वे एक भविष्यवाणी की पुस्तक का अध्ययन करें। प्रथम भाग से किसी एक भविष्यद्वक्ता के विषय में उन्हें जानकारी दें। फिर उनसे कहें कि जिस पुस्तक का वे अध्ययन कर चुके हैं उनकी मुख्य-मुख्य बातें अन्य विश्वासियों को भी बताएं।

यदि स्थानीय धर्म के लोगों में भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास किया जाता है तो उनसे आप कहें कि वे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें लेना चाहें तो ले सकते हैं। यदि वे पुस्तकें लेने की इच्छा व्यक्त करते हैं, तो उन्हें बाईबल उपलब्ध कराएं अथवा पता बता दें।

3. अपने सहयोगियों के साथ मिलकर आगामी आराधना-सभा की योजना बनाएं :

परमेश्वर ने यशायह भविष्यद्वक्ता को किस प्रकार बुलाहट दी इस विषय में एक नाटक प्रस्तुत कीजिए या पढ़कर सुनाएं।

प्रत्येक विश्वासी को अवसर दीजिए कि वह बताएं कि किस प्रकार भविष्यवाणियों की पुस्तकों के अध्ययन ने उन्हें आशीषें दी हैं।

प्रथम भाग से, भविष्यवाणियों की परिभाषा तथा पृष्ठभूमि के विषय समझाएं।

भविष्यवाणियों की पुस्तकों के मुख्य विषयों पर संक्षिप्त अवलोकन कीजिए।

बच्चे और युवकों को बताएं कि उन्होंने क्या तैयारी की है।

प्रभु भोज विधि मनाने के लिए पढ़ें यशायाह 53:5, साथ ही बताएं कि प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु यीशु के रक्तबलिदान के विषय पहले ही से बता दिया था।

तीन या चार व्यक्तियों के छोटे समूह बनाएं आपस में विचार-विमर्श कों कि किस प्रकार भविष्यवाणियां पूरी हुईं। अंत में एक दूसरे के लिए प्रार्थनाएं कीजिए।

सब लोग मुखाग्र करें : प्रेरितों के काम 26:22

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net